राष्ट्रीय संगोष्ठी

(21 एवं 22 अक्टूबर, 2021)

स्वातंत्र्य समर और छत्तीसगढ़

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद द्वारा प्रायोजित

आयोजक

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

एवं

भारतीय इतिहास संकलन समिति, छत्तीसगढ़ प्रांत

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

संरक्षक

प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल

कुलपति

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

सह–संरक्षक

प्रो. शैलेन्द्र कुमार

कुलसचिव

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय,

बिलासपुर, छत्तीसगढ़

सह–संरक्षक

प्रो. मनीषा दुबे

अधिष्ठाता (सामाजिक विज्ञान संकाय)

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय,

बिलासपुर, छत्तीसगढ़

संयोजक

प्रो. प्रवीन कुमार मिश्रा

विभागाध्यक्ष

इतिहास विभाग

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय,

बिलासपुर, छत्तीसगढ़

सह–संयोजक

प्रो. प्रदीप शुक्ला

इतिहास विभाग

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय,

बिलासपुर, छत्तीसगढ़

आयोजन सचिव

डॉ. घनश्याम दुबे

इतिहास विभाग

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय,

बिलासपुर, छत्तीसगढ़

आयोजन सह–सचिव

डॉ. सीमा पाण्डेय

इतिहास विभाग

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय,

बिलासपुर, छत्तीसगढ़

संगोष्ठी के विषय में–

विषय– स्वातंत्र्य समर और छत्तीसगढ़

भौगोलिक एवं सांस्कृतिक रूप से विशिष्ट छत्तीसगढ़ ऐतिहासिक रूप से भी सर्वथा विशिष्ट स्थान रखता है। विदित हो कि प्राचीन काल से ही छत्तीसगढ़ भूमि अपने विशेष भौगोलिक स्वरूप के कारण ही साम्राज्य कालीन आक्रमणों से सदैव सुरक्षित रहा। यदा–कदा आक्रमण के प्रसंग अवश्य मिलते हैं किन्तु उनके पूर्ण शासन का कोई ठोस प्रमाण प्राप्त नही मिलता। छत्तीसगढ़ प्रदेश में प्रत्यक्ष रूप से पहला शासन मराठाओ द्वारा स्थापित किया जाता है , जिसके पश्चात यहाँ राजनीतिक वयवस्था में स्पष्ट परिवर्तन दृष्टिगोचर होते है।

रायगढ़ समझौता तथा मराठा संधि ने अंग्रेजों की जड़े छत्तीसगढ़ में जमाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, किन्तु अंग्रेजों की शोषण तथा दमनकारी नीति, प्रजातिगत तथा रंग में भेदभाव, आर्थिक, धार्मिक व राजनीतिक उत्पीड़न की नीति से छत्तीसगढ़ की जनता भलीभांति परिचित थी और आरंभ से ही अंग्रेजी नीति के खिलाफ थी। छत्तीसगढ़ की स्थानीय जनता के एकजुटता के कारण ही बस्तर तथा सरगुजा राज्यों में अंग्रेज अपने पैर जमाने में असफल रहे। छत्तीसगढ़ के वनवासी रणबांकुरों ने 1857 के भारतवर्ष के प्रथम स्वतंत्रता आन्दोलन के पूर्व ही समय समय पर अंग्रेजी नीति के खिलाफ सफलता पूर्वक अपना आन्दोलन किया।

सन् 1857 में जब पूरे भारत में स्वाधीनता को लेकर आन्दोलन हो रहे थे तो छत्तीसगढ़ के लोगों ने भी इस आन्दोलन में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। 1857 के संघर्ष के पश्चात भी यहां अन्य संघर्ष हुए। इनमें कोई संघर्ष 1859 ई., मुरिया संघर्ष 1876 ई., बस्तर की रानी का संघर्ष 1878–1892 ई., पहाड़ी कोरवा संघर्ष 1883 ई., महान भूमकाल संघर्ष 1910 ई. आदि प्रमुख हैं।

छत्तीसगढ़ में कांग्रेस स्थापना के पूर्व से ही पुनर्जागरण का कार्य प्रदेश स्तर पर सकिय था, किन्तु कांग्रेस की स्थापना के पश्चात पूर्ण रूप से छत्तीसगढ़ की राष्ट्रवादी गतिविधियां कांग्रेस से जुड़ गई और आगे संगठित भी हुई। जिसमे अनेक ज्ञात, अल्प ज्ञात एवं अज्ञात सेनानियों ने अपने अपने स्तर पर आन्दोलनों में अपनी सहभागिता दर्ज की। गांधीजी तथा स्थानीय नेताओं के नेतृत्व में जंगल तथा अन्य सत्याग्रह हुए। आजादी के समर में छत्तीसगढ़ के बालक तथा बालिकाएं भी पीछे नहीं थे इस क्रम में बालक बलीराम आजाद (ब्राह्मण पारा रायपुर) तथा बालिका दयावती (तमोरा) के नाम उल्लेखनीय है।

राज्य के लोगों ने भी अपने देश को स्वाधीन कराने के लिए बहुत पहले से संघर्ष प्रारंभ कर दिया था किन्तु छत्तीसगढ़ के कुछ आन्दोलनों को छोड़कर अन्य बहुत सारे आन्दोलनों के विषय में जन सामान्य को जानकारी का आभाव है साथ ही इस अंचल में बहुत सारे ऐसे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी हुए जिन्होंने माँ भारती को स्वतंत्र कराने के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया किन्तु राष्ट्रीय पटल पर उनका नाम उल्लेखित नही है। छत्तीसगढ़ में राष्ट्रीय स्वातंत्र्य समर के इसी विविध आयामो को ध्यान में रखते हुए इस संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें अंतर्विधात्मक दृष्टि से अध्ययन एवं विश्लेषण अपेक्षित है। इस संगोष्ठी के अंतर्गत प्रमुख विषय एवं निर्दिष्ट उपविषयो पर अलग–अलग दृष्टियों से शोधपत्र अध्येताओं से शोधपत्र आमंत्रित हैं।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के उप–विषय–

1 स्वाधीनता आंदोलन में छत्तीसगढ़ के वनवासियों की भूमिका।
2 स्वाधीनता आंदोलन में छत्तीसगढ़ के रियासतों एवं जमींदार की भूमिका।
3 स्वतंत्रता आंदोलन में छत्तीसगढ़ के महिलाओं की भूमिका।
4 स्वतंत्रता आंदोलन में छत्तीसगढ़ के कृषक समाज की भूमिका।
5 स्वतंत्रता आंदोलन में छत्तीसगढ़ के मठों एवं मंदिरों की भूमिका।
6 स्वतंत्रता आंदोलन में पत्रकारों एवं पत्र–पत्रिकाओं की भूमिका।
7 स्वतंत्रता आंदोलन में छत्तीसगढ़ के आध्यात्मिक गुरुओं की भूमिका।
8 स्वाधीनता आंदोलन से संबंधित छत्तीसगढ़ के प्रमुख स्थल।
9 छत्तीसगढ़ के ज्ञात, अल्प–ज्ञात तथा अज्ञात स्वतंत्रता सेनानियों के विषय में।
10 छत्तीसगढ़ राज्य के पड़ोसी राज्यों में स्वतंत्रता आंदोलन एवं उनका छत्तीसगढ़ पर प्रभाव।
11 राष्ट्रीय संगोष्ठी से संबंधित अन्य उप विषय।

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय–

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, सन् 1983 में स्थापित एक आवासीय विश्वविद्यालय है। 18 वीं सदी के महान सतनामी संत गुरु घासीदास के नाम पर स्थापित इस विश्वविद्यालय का उन्नयन, केन्द्रीय विश्वविद्यालय के रूप में, ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान केन्द्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम 2009 के अंतर्गत हुआ। यह भारतीय विश्वविद्यालय संघ और कॉमनवेल्थ यूनिवर्सिटीज एसोसिएशन का सक्रिय सदस्य है। विश्वविद्यालय राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् (नैक) द्वारा बी श्ठश मान्यता प्राप्त है। गुरु घासीदास विश्वविद्यालय सामाजिक और आर्थिक रूप से चुनौती वाले क्षेत्र में स्थित है, विश्व विद्यालय को उचित नाम, महान संत गुरू घासीदास (जन्म 17वीं सदी में) के सम्मान स्वरूप दिया गया, जिन्होंने समाज में व्याप्त बुराईयों और समाज में प्रचलित अन्याय के खिलाफ एक अनवरत संघर्ष छेड़ा। विश्वविद्यालय एक आवासीय सम्बद्ध संस्था है। इसमें स्थानीय लोगों की शिक्षा की आवश्यकता के लगभग पूरे आयामों को शामिल किया गया है। इस विश्वविद्यालय ने सामुदायिक विकास के विस्तार के साथ उच्च शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान बनाया है।

इतिहास संकलन समिति छत्तीसगढ प्रान्त

इतिहास–संकलन समिति, छत्तीसगढ़ प्रान्त इतिहास के क्षेत्र में कार्यरत विद्वज्जनों का एक संगठन है जो इतिहास, संस्कृति, परम्परा आदि के क्षेत्र में प्रामाणिक, तथ्यपरक तथा सर्वांगपूर्ण इतिहास–लेखन तथा प्रकाशन आदि की दिशा में कार्यरत है। देश एवं विदेशों में रह रहे इतिहास एवं पुरातत्त्व के विद्वान्, विश्वविद्यालयों में कार्यरत प्राध्यापक, अध्यापक, अनुसन्धान–केन्दों के संचालक, भूगोल, खगोल, भौतिशास्त्रादि अनेक क्षेत्रों के विद्वान् तथा वैज्ञानिक एवं इतिहास में रुचि रखनेवाले विद्वान इस कार्य से जुड़े हुए हैं।

बिलासपुर के विषय में–

न्यायधानी बिलासपुर धान का कटोरा के नाम से प्रसिद्ध छत्तीसगढ़ राज्य में अवस्थित है। बिलासपुर छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से 111 कि.मी. दूर अरपा नदी के तट पर समुद्र तल से 860 फीट की ऊँचाई पर स्थित है।

यह स्थान दुनिया भर में आम, साड़ी, सुगंधित दुबराज चावल, हैंडलूम, बुने हुए कोसा रेशम तथा समृद्धि एवं विविधता पूर्ण संस्कृति लिए जाना जाता है। ऐतिहासिक स्थल रतनपुर अपने किले और सिद्ध पीठ महामाया मंदिर के लिए प्रसिद्ध है। इस किले का द्वार शिव, विष्णु और ब्रह्मा तीन प्रमुख देवताओं को दर्शाता है। 10वीं और 11वीं शताब्दी का पातालेश्वर केदार मंदिर पुरातात्विक स्थल है और मल्हार का मुख्य आकर्षण है। एक और ऐतिहासिक स्थान तालाग्राम देवरानी–जेठानी मंदिर और रूदशिव की अद्वितीय प्रतिमा के लिए प्रसिद्ध है। ऐसा माना जाता है कि मुण्डकोपनिषद की रचना मदकू द्वीप में की गयी है, जो भारत के राष्ट्रीय आदर्श वाक्य श्सत्यमेव जयतेश का स्त्रोत है।

बिलासपुर कैसे पंहुचें

बिलासपुर से निकटतम हवाई अड्डा बिलासा बाई केवटिन हवाई अड्डा है, जो विश्वविद्यालय से 30 मिनट की दूरी पर है तथा स्वामी विवेकानन्द हवाई अड्डा रायपुर, जो बिलासपुर से 3 घण्टे की दूरी पर स्थित है। यह लगभग सभी महत्वपूर्ण शहरों से जुड़ा हुआ है, जैसे भोपाल, प्रयागराज, नागपुर, चंडीगढ़, चेन्नई, हैदराबाद, इन्दौर, जयपुर, दिल्ली, कोलकाता एवं मुम्बई। बिलासपुर दक्षिण–पूर्व मध्य रेलवे का मुख्यालय है यह मुम्बई–कलकत्ता रेलवे लाइन पर स्थित है, जो भारत के लगभग सभी महत्वपूर्ण शहरों से रेलवे / सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है।

महत्वपूर्ण तिथियाँ –

शोध सारांश जमा करने की अंतिम तिथि 15 अक्टूबर, 2021

शोध पत्र जमा करने की अंतिम तिथि 20 अक्टूबर, 2021

पंजीयन की अंतिम तिथिरू 20 अक्टूबर 2021

शोध सारांश अधिकतम 300 शब्दों का तथा शोध पत्र 3000 शब्दों का होना चाहिए। शोध पत्रों की एकरूपता बनाए रखने के लिए कृपया निम्न निर्देशों **पर ध्यान दें–**

1 शोध पत्र A4 आकार के कागज पर चारों ओर एक इंच जगह छोड़ कर अंग्रेजी के 12 पॉइंट टाइम्स न्यू रोमन और हिन्दी के 14 पॉइंट कृतिदेव 010 फॉन्ट पर टाइप किया गया हो।

2 कृपया शोध सारांश एवं शोध पत्र की सॉफ्ट कॉपी एम.एस.–वर्ड फार्मेट में abisycg@gmail.com ई–मेल द्वारा भेजें।

4 पाद टिप्पणियाँ कृपया मैनुअली ना देकर कंप्यूटर की प्रणाली से आलेख के अंत में दें। इसमें लेखक का नाम, पुस्तक का नाम प्रकाशन वर्ष और पृष्ठ संख्या दी गई हो। जैसे– सुमित सरकार, सामाजिक इतिहास लेखन की चुनौती, नई दिल्ली, 2001 पृ. 134।

पंजीयन विवरण–

20 अक्टूबर 2021 तक

शिक्षाविद् – 500 रूपये

शोधार्थी– 300 रूपये

विद्यार्थी– 200 रूपये

पंजीयन शुल्क अंतिम तिथि के पूर्व संगोष्ठी के खाता क्रमांक–

00000037137162271 नाम– Registrar, Guru Ghasidas University Bilaspur, भारतीय स्टेट बैंक, IFSC CODE SBIN0018879 मे NEFT के माध्यम से जमा कराया जा सकता है।

आवास व्यवस्था–

आवास व्यवस्था का अनुरोध पंजीयन प्रपत्र में अंकित कर भेजे।

आवास व्यवस्था उपलब्धता के आधार पर प्रदान की जायेगी। अद्यतन सूचना के लिये वेबसाइट का अवलोकन करें।

सम्पर्क सूत्र–

संयोजक प्रो. प्रवीन कुमार मिश्रा– 06306752735

आयोजन सचिव डॉ. घनश्याम दुबे– 09479168672

आयोजन सह–सचिव डॉ. सीमा पाण्डेय–09424143403

राष्ट्रीय संगोष्ठी

पंजीयन प्रपत्र

1 नाम————————————————————

2 पदनाम———————————————————

3 संस्था का नाम————————————————

4 लिंग—————————————————————

5 पत्राचार का पता———————————————

6 मोबाईल नं.–

7 ई–मेल आई.डी. –

8 शोधपत्र शीर्षक————————————————

9 भुगतान का विवरण——————————————

भुगतान का माध्यम———————————————

राशि———————————————————————

भुगतान की तिथि–

10 क्या आप आवास की सुविधा लेना चाहते है– हाँ ( ) नहीं ( )

यदि हाँ तो आगमन एवं प्रस्थान का विवरण दें–

आगमन की तिथि एवं समय ——————————————

प्रस्थान की तिथि एवं समय——————————————

नोट– केवल निर्धारित समय तक पंजीकृत अध्येताओं को ही आवास की सुविधा दी जाएगी।

स्वागत समिति

प्रो. मनीषा दुबे (संकायाध्यक्ष सामाजिक विज्ञान अध्ययनशाला)

प्रो. देवेन्द्र नाथ सिंह (संकायाध्यक्ष कला अध्ययनशाला)

प्रो. एस. एस. सिंह (संकायाध्यक्ष प्राकृतिक संसाधन अध्ययनशाला)

प्रो. एल. बी. एस. भाष्कर (जीव विज्ञान अध्ययनशाला)

प्रो. टी. वी. अर्जुनन (संकायाध्यक्ष अभियन्त्रिकी एवं प्रद्योगिकी अध्ययनशाला)

प्रो. ए. एस. रणदिवे (संकायाध्यक्ष गणित एवं अभिकलन विज्ञान अध्ययनशाला)

प्रो. गौतम कुमार पात्रा (संकायाध्यक्ष भौतिक विज्ञान अध्ययनशाला)

प्रो. मनीष श्रीवास्तव (संकायाध्यक्ष प्रबंध एवं वाणिज्य अध्ययनशाला)

प्रो. पी. के. वाजपेयी (संकायाध्यक्ष विधि अध्ययनशाला)

प्रो. वी. एस. राठौर (संकायाध्यक्ष शिक्षा अध्ययनशाला)

प्रो. बी. एन. तिवारी (संकायाध्यक्ष अंतरविषयक शिक्षा एवं अनुसंधान अध्ययनशाला)

डॉ. एम. एन.त्रिपाठी (अधिष्ठाता छात्र कल्याण)

परामर्शदात्री समिति

प्रो. प्रदीप शुक्ला इतिहास विभाग

प्रो. मनीषा दुबे (अर्थशास्त्र विभाग)

प्रो. अनुपमा सक्सेना (राजनीति विज्ञान विभाग)

प्रो. प्रतिभा जे. मिश्रा (समाज कार्य विभाग)

डॉ. नितेश कुमार मिश्रा (अध्यक्ष इ.सं.स., छत्तीसगढ़)

सम्पर्क सूत्र–

प्रो. प्रवीन कुमार मिश्रा

विभागाध्यक्ष

इतिहास विभाग

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय,

बिलासपुर, छत्तीसगढ़

मोबाईल नं. 06306752735

डॉ. नितेश कुमार मिश्रा

(अध्यक्ष इ.सं.स., छत्तीसगढ़)

मोबाईल नं. 09770014040

Guru Ghasidas Vishvvidyalay

(A Central University)

Koni, Bilaspur (ChhattAsgarh) 495009 INDIA

Ph:+91-7752-260283, +91-7752-260353

Websit: www.ggu.ac.in